संस्कृत साहित्ये भारतीयराजनीतौ कौटिल्यस्य योगदानम्

डॉ0 सविता शर्मा
एम0 ए0, पी0एच0डी0
+2 संस्कृत शिक्षिका
म.र.द.बा.उ.वि, सीतामढ़ी

संस्कृत साहित्याकाश में चाणक्य या कौटिल्य की प्रसिद्धि का मूल कारण उनकी राजनीति–विषय ग्रन्थ अर्थशास्त्र है। यद्यपि अर्थशास्त्रके अलावा भी चाणक्य ने तीन और ग्रन्थ लिखें। परन्तु अर्थशास्त्र में वर्णित राजनीतिशास्त्र सर्वाधिक प्राचीन नीति है। भारतीय राजनीति का विवेचन अर्थशास्त्र के अन्तर्गत हुआ है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीति का प्रौढ़ ग्रन्थ है, जिससे पता चलता है कि इस शास्त्र का इस देश में पर्याप्त विकास हो चुका था। गृह्यसूत्रों और महाभारत में हमें राजनीति का वर्णन मिलता है। वैदिककाल में ही सभा और समिति नामक राजनीति संस्थाएँ बन चुकी थी। महाभारत में अर्थशास्त्र के प्रथम रचयिता ब्रह्म और उनकी परम्परा को चलाने वाले शिव, इन्द्र, वृहस्पति और उशनस् का वर्णन है। महाभारत में भी कुछ अंशों में राजनीति का वर्णन है।

कौटिल्य (चाणक्य या विष्णुगुप्त) का अर्थशास्त्र चतुर्थ शती ई0पू0 की रचना है और यह अपने विषय का सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें वृहस्पति, बाहुदन्तिपुत्र, विशालाक्ष और उशनस का आचार्यो के रूप में उल्लेख आया है। इसमें राजतन्त्र सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन 15 अधिकरणों और 180 प्रकरणों में हुआ है। प्रत्येक प्रकरण अध्यायों में विभाजित है। तथा अध्यायों में गद्यभाग में पद्यों का समावेश करके पूर्वस्थापित सिद्धांतों का संक्षेप में उल्लेख किया है। आचार्य दण्डी के दशकुमारचरित नामक गद्यकाव्य से पता चलता है कि विष्णुगुप्त के अर्थशास्त्र में 6000 श्लोक थे। अर्थशास्त्र में लेखन के विचार अनुभव तथा यथार्थ पर आधारित हो। परवर्ती राजनीति सम्बंधी ग्रन्थों पर अर्थशास्त्र का व्यापक प्रभाव है। इस ग्रन्थ को सर्वप्रथम 1909 ई0 में मैसूर के डॉ0 आर0 शाम शास्त्री ने प्रकाशित किया था। यह ग्रन्थ प्राचीन भारत का ग्रन्थकार कहलाता है। कौटिल्य के राजनीति सिद्धांत राजतन्त्र पर आधारित है किन्तु

वे निरकुंश राजतन्त्र के समर्थक नहीं हैं। उनका स्पष्ट मत है कि राजा का सबसे बड़ा कर्त्तव्य प्रजा को सुख और आनन्द पहुँचाना है। उसे राज्य में शान्ति एवं व्यवस्था करके जनता के जीवन और धन की रक्षा करनी चाहिए।

राजा का दूसरा बड़ा कर्त्तव्य विदेशी राज्यों एवं पड़ोसी शासकों पर ध्यान रखना तथा स्वराष्ट्र की रक्षा हेतु युद्ध करना है। इन दो कर्त्तव्यों का अर्थशास्त्रकार ने तन्त्र और अवाप कहा है। इनके अतिरिक्त कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में प्रशासन–संबंधी सिद्धांतो तथा अधिनियमों का वर्णन किया है। विजिगीषु राजा द्वारा साम्रज्य निर्माण हेतु अनुष्ठेय विधियों और नियमों का भी अर्थशास्त्र में प्रतिपादन किया गया है। अर्थशास्त्र में भाग्यवाद के स्थान पर पुरूषार्थवाद की प्रतिष्ठा की गई है। इस प्रकार अर्थशास्त्र एक अनुपम कृति है और उसमें छोटे से बड़े सभी राजोचित क्रिया–कलापों का विवरणात्मक आलोचना है। उसके कुछ प्रमुख विषयों की तालिका अधिकरणक्रम से इस प्रकार है –

1. विनयाविकारिक – राजवृत्ति, वार्त्ता, राजर्षि, काव्यवहार, अमात्य, गुप्तचर, मंत्राधिकार राजदूतो की नियुक्ति, राजभवन – निर्माण।
2. अध्यक्ष प्रचार – जनपदनिवेश दुर्गविधान समाहर्त्त के कार्य आय–व्यय के स्थान सुवर्णाध्यक्ष।
3. धर्मस्थीय (न्यायविभाग) – दीवानी और फौजदारी सम्बंधी विवादें पर विचार विवाह के कानून, वस्तु विक्रय, ऋण के कानून, घरोहर मजदूरो के नियम डाका मारपीटा।
4. योगवृत्ति – राजकर्मचारियों की प्रजा की पीड़ा पहुँचाने से रोकना राजकोष पढ़ाने उपाय मृत्यों के भरण–पोषण की विधि।
5. मण्डलोनि – राज मंत्री आदि के गुणो के वर्णन।
6. वाड्गुण्य – वृद्धि और क्षय शत्रु के साथ युद्ध और सन्धि पराजित राजा के साथ व्यवहार।
7. व्यसेनाधिकारक – राजा पर आने वाल विपत्तियों का वर्णन राज्य पर आने वाले संकट, पुरूषो की विपत्तियाँ।

8. अभियास्यत्कर्म – सेना की तैयारी सेना का नाश प्रयाण बाहरी और भीरती आपत्तियाँ
9. सांग्रामिक – सेना की छावनी सेना को प्रोत्साहन, व्यूह और प्रतिव्यूह, युद्ध के योग्य भूमि, हाथी रथ आदि।
10. संधवृत – भेद के प्रयोग और विषादि के द्वारा शत्रुओं को मारना।
11. आबलीयस – राजदूत के कर्मो का वर्णन बुद्धिभत्ता से युद्ध करने के उपाय शत्रु के सेनापतियों के वध का ढंग, शत्रु–सेना को उनके उपायों ये वश में करना।
12. दुर्गलभ्भापाय – शत्रु के दुर्गो को प्राप्त करने के उपाय, जीते हुए प्रान्तों में शान्ति स्थापित करना।
13. आषनिषदिक – शत्रु के विनाश के लिए औषधियों के प्रयोगो का वर्णन, अद्भूत औषधियों से और मंत्रों का वर्णन, औषधियों से भूख प्यास मिटाना।
14. तंत्र–युक्ति – अर्थशास्त्रीय शब्दों की परिभाषा। इस तरह कौटिल्य ने राजतन्त्र को सुव्यवस्थित संगठित करने हेतु जितने भी नीति संगत सूत्रों को अधिकरणों में सभावेशित किया वे समय के कसौटी पर निल्कुल खरे सिद्ध हुए।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र का संस्कृत–साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा। कामन्दक का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ नीतिसार अर्थशास्त्र को प्रेरणा लेकर रचा गया है। जैन सोमदेव, सुरी के नीतिवाक्य पर अर्थशास्त्र का प्रभाव है। हेमचन्द्र के लघुअर्हन्नीति नामक ग्रन्थ पर भी इसका प्रभाव है। शुक्रनीतिसार 2200 श्लोक का अर्थशास्त्र संबंधी ग्रन्थ है। अन्य राजनीतिशास्त्र ये है। भोज का व्यक्तिकल्पतरू, चन्द्रेश्वर का नीतिरत्नाकार तथा नीतिप्रकाशिका आदि।

राजनीति के क्षेत्र में आचार्य कौटिल्य का स्थान अद्वितीय है। कौटिल्य द्वारा रचित कृतियों में अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र एवं चाणक्य नीति अत्यन्त प्रभावशाली होने के कारण राज्य एवं शासन के क्षेत्र में एक अद्वितीय कृति है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र

(Economics) नहीं अपितु राजनीतिक रचना है। यथा – कौटिल्येन नरेन्द्रार्थे शासनस्य विधिःकृतः अर्थात् राजा के लिए शासन व्यवस्था का विश्लेषण।

राज्य में धर्म, कानून, राजनीति, व्यापार, उद्योग, कृति आदि विभिन्न विषयों का समायोजन इसमें परिलक्षित होता है। 15 अधिकरणों में विभक्त यह ग्रन्थ यथा – विनयाधिकारिक अध्यक्ष, प्रचार धर्मस्थीय, कारक रक्षण, योगवृत, प्रकृतियों के गुण, षाड्गुण्य व्यसनाधिकारिक, अभियास्यत कर्म, संग्रामिक संघ वृत, आवलीयस, गुर्गमोपाय, औपनिषदिक तथा तंत्रयुक्ति।

राज्य के सप्तांग में प्रथम स्वामी होता है। राजा को धर्म में रूचि रखने वाला दूरदर्शी, सत्यवादी, महत्वाकांक्षी, अथक, परिश्रमी, गुणियों की पहचान और आर्डर करने वाला, शिक्षा प्रेमी योग्यमंत्रियों से युक्त तथा उच्च कुल में उत्पन्न होना चाहिए।

आमात्य – राज्य का दुसरा प्रमुख अंग आमात्य अर्थात् मंत्री पुरोहित सेनापति व युवराज दौवारिक अंतर वैशिक प्रशस्ता, समहर्त्ता, सन्निधाता, कोतवाल, पौर व्यवहारिक सभाध्यक्ष दण्डपाल, दुर्गपाल तथा आट्विक होता है। राजा कितना भी गुणवान क्यों न हो आमात्य यदि गुणवान और योग्य न हो तो शासन की संफलता नहीं हो सकती है।

जनपद – राज्य का तीसरा अंग जनपद होता है। इसमें मुख्यतया राज्य की भूमि तथा जनता है।

दुर्ग–राज्य का चौथा मुख्य अंग दुर्ग है। राजा को जनपद की रक्षा के लिए सीमांत प्रदेश में दुर्ग बनाना चाहिए। कौटिल्य के मुताबिक दुर्ग चार प्रकार के होते है – जल से घिरा हुआ, चटट्ानों एवं पर्वतों से घिरा हुआ, मरूस्थल में बना दुर्ग तथा काटेदार झाड़ियों से बना दुर्ग।

कोष – प्रजा के कल्याणार्थ एवं राज्य की प्रगति के लिए कोष पर राजा को अधिक निर्भर रहना चाहिए।

सेना – इसके अन्तर्गत हाथी, घोड़ा, रथ तथा राज्य की सुरक्षा के लिए चतुरंगिणी सेना आवश्यक है। सैनिकों को राज्य के प्रति निष्ठावान तथा राज्य की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

कौटिल्य ने सप्तांग के अतिरिक्त साम, दाम, दण्ड, भेद इत्यादि का प्रयोग आन्तरिक प्रशासन हेतु उपयुक्त माना है।

कौटिल्य के अनुसार चार प्रकार की विधाएँ है – आन्वीक्षिकी अध्यात्म या दर्शन विधाख त्रयी (ऋग, यजु,साम) वार्ता, कृषि पशुपालन वाणिज्य तथा दण्डनीति के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र। यथ्ज्ञा–आन्वीक्षिकी गयी वर्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती।

सारतः यह सर्वविदित है कि आचार्य कौटिल्य का योगदान संस्कृत साहित्य एवं भारतीय राजनीति के क्षेत्र में प्रशंसनीय रहा है।

निष्कर्ष यह है कि भारत में नीतिपरक ग्रन्थो–पंचतन्त्र, हितापदेश आदि में ही नहीं वरन् महाकाव्यों में भी राजनीति विषयक सिद्धांत मिलते है। महाकवि भारवि का राजनीति विषयक् ज्ञान किरातार्जुनीयम् में स्पष्ट परिलक्षित होता है। अर्थशास्त्र भारतीय राजनीति–संबंधी सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ है जो इसकी प्राचीनता एवं सृदृढ़ परम्परा का द्योतक है।

समय क्रम से राजनीति का स्वरूप भी बदलता गया। कौटिल्य के समय राजतंत्र था, अतएव कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज और विषयक नीति समावेशित है। अर्थशास्त्र अर्थ का तात्पर्य है। राजा और प्रजा का अर्थ। इस प्रकार अर्थशास्त्र की अभिव्यक्ति है, वह विद्या जो राजा और राष्ट्र को अर्थवान् व समृद्धशाली बना सके। राजा के संबंध में कौटिल्य का स्पष्टतया कहना है –

"विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रतः।

अनन्यां पृथ्वी भुङ्क्ते सर्वभूतहिते रतः।।

अर्थात राजा समस्त प्राणियों के हित में रत रहता है तभी वह अभ्युदय कर सकेगा।

परन्तु बदलते परिवेश में राजा का स्वरूप बदला जो पहले राजतंत्र था अब गणतंत्र हो गया। परन्तु राज्य के शासन का स्वरूप बदलने से वहाँ राज्योचित क्रिया

तो नहीं बदलती है। राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए उनका विभाग अध्यक्ष तो किसी न किसी रूप में रहता है। विश्व परिदृश्य में राज्य को स्थापित करने तथा दूसरे देशों के साथ मित्रवत् सामञ्जस्यपूर्ण संबंध तो बनाना ही पड़ता है जिससे राज्य का विकास, विज्ञान, व्यापार, कला, समाजिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में हो सके। शत्रु देशों के साथ कैसे व्यवहार हो ? किस तरह आधुनिक ज्ञान विज्ञान के जरिये उन्नत किस्मों में रडार मिसाईल एवं सामरिंक अनुसंधान हो कि विश्व के तमाम देश उस राज्य के वर्चस्व का लोहा माने।

मेरा मानना है कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र का सत्व या निचोड़ सभी युग में प्रांसगिक है। आवश्यकता इस बात को है कि इस तत्व का कितना उपयोग हम राज्य विकास में कर पाते है। कौटिल्य की अर्थशास्त्रीय नीति वह स्टेम सेल (मास्टर कोशिका) है जो किसी नीति–विषयक में प्रत्यारोपित कर देने पर स्वतः उस नीति–विषयक समस्या का समाधान निकल आता है।

समय की कसौटी पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र आज भी प्रासंगिक, न्यायोचित एवं तर्क संगत ग्रन्थ है।

सन्दर्भ सूची :–

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
2. शुक्रनीतिसार
3. भोज का व्यक्तिकल्पतरू
4. चन्द्रेश्वर का नीतिरत्नाकर तथा नीतिप्रकाशिका
5. भारवि का किरातार्जुनीय